International Journal of Sanskrit Research 2022; 8(1): 261-262

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2022; 8(1): 261-262
© 2022 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 18-10-2021
Accepted: 15-12-2021

निर्मला लोहार
शोधछात्रा, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
निर्मला लोहार
शोधछात्रा, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान, भारत

श्रीहर्षवर्धन के नाटकों में संगीत एवं कला योजना

निर्मला लोहार

प्रस्तावना

संस्कृत साहित्य के इतिहास में सम्राट हर्षवर्धन का प्रमुख स्थान है। संस्कृत के अन्य कवियों के समान श्रीहर्षवर्धन का समय अन्धकाराच्छन्न नहीं है। हर्ष ने अपनी कृतियों में अपना कोई परिचय नहीं दिया है। तथापि बाह्य प्रमाणों से श्रीहर्ष के संबंध में पूर्ण जानकारी प्राप्त होती है। इनका जन्म थानेश्वर में 590 ई. में हुआ था। इनके पिता का नाम महाराज प्रभाकरवर्धन तथा माता का नाम यशोमती था। इनके अग्रज राज्यवर्धन तथा अनुजा राज्यश्री थी। सम्राट हर्षवर्धन अन्तिम भारतीय हिन्दू शासक के रूप में प्रसिद्ध है।

हर्ष स्वयं विद्वान् था और विद्वानों का आश्रयदाता भी था। उसके दरबार में बाणभट्ट, मयूर, मतंग आदि कवि थे। इन्होंने संस्कृत में काव्यग्रन्थों की रचना कर संस्कृत साहित्य को समृद्ध बनाया। प्रणय नाटिकाओं के रचयिता के रूप में हर्ष का स्थान बहुत ही सम्मानित है। हर्ष की रचनाओं से उस युग की सांस्कृतिक तथा सामाजिक परम्परा के बारे में पता चलता है।

हर्ष की तीन प्रमुख रचनाएँ है – प्रियदर्शिका, रत्नावली नाटिका और नागानन्द नाटक। प्रियदर्शिका और रत्नावली दोनों ही नाटिकाओं में उदयन और प्रियदर्शिका तथा रत्नावली की प्रेम की कथा वर्णित है। नागानन्द पाँच अंकों का नाटक है जिसमें विद्याधर जीमूतवाहन के आत्मोत्सर्ग की कथा वर्णित है।

नाट्य की दृष्टि से हर्ष के रूपक नाट्यशास्त्रीय पद्धति को और अभिनेयता के गुण को तो धारण करते ही है साथ काव्यत्व की दृष्टि से भी उत्तम है। हर्ष के रूपकों में विविध चित्रण उपलब्ध होते हैं। अन्तःपुर के विलासमय प्रसंग, नागरिकों के हर्षोत्सव, देवताओं का पूजन, प्रकृति की रमणीयता, नारी का सौन्दर्य, प्रणय भावनायें तथा नृत्य–संगीत इत्यादि का वर्णन है।

कवि हर्षवर्धन राज कार्यो में व्यस्त होते हुए भी अपनी रचनाओं में संगीत एवं चित्रकला का समुचित प्रयोग किया है। इनकी रचनाओं से विदित होता है कि हर्ष को संगीत एवं चित्रकला का भी ज्ञान था। संगीत सीखाते हुए ही उदयन ने वासवदत्ता का अपहरण किया था। हर्ष की वीणा का नाम घोषवती था। इसी वीणा को बजाकर वह हाथी को वश में करता था। प्रियदर्शिका नाटिका में उदयन आरण्यका के संगीत एवं वीणा वादन की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा करता है।

> व्यक्तिर्व्यञ्जनधातुना दशविधेनाप्यत्र लब्धामुना
> विस्पष्टो द्रुतमध्यलम्बितपरिच्छिन्नस्त्रिधायं लयः।
> गोपुच्छप्रमुखा क्रमेण यतयस्तिस्रोऽपि संपादिता–
> स्तत्त्वौघानुगताश्च वाद्यविधयः सम्यक् त्रयो दर्शिताः।।[1]

अर्थात् इस गीत में दसों प्रकार के (पुष्प, कल, तल, बिन्दु, रेफ, निःस्वानित, निष्कोटित, उन्मृष्ट, अवमृष्ट और निबन्धन) व्यंजन धातु ने स्पष्टता प्राप्त की है। द्रुत, मध्य और विलम्बित गतियों से सीमित यहाँ तीनों प्रकार का लय स्पष्ट हो रहा है। गोपुच्छा आदि (समा, स्रोतोगता और गोपुच्छ) तीनों प्रकार की यतियाँ क्रमशः सम्पादित की गई है, तत्व, ओघ और अनुगत ये तीनों प्रकार की वाद्य–विधियाँ अच्छी प्रकार से बताई गई है।

हर्ष के समय में संगीत के तीन मुख्य अंग थे– गीत, नृत्य और वाद्य। कन्याओं को इनकी शिक्षा दी जाती थी। संगीत की शास्त्रीय पद्धति पर्याप्त विकसित थी। गुणीजन संगीत सुनकर इस विशेषता को समझ लेते थे। प्रियदर्शिका नाटिका में विजयसेन प्रियदर्शिका को विन्ध्केतु की पुत्री समझकर उसे उदयन को सौंपता है तो उदयन उसे गीत, नृत्य तथा वाद्य आदि विशिष्ट कलाओं की शिक्षा के लिए कहता है।

[1] प्रियदर्शिका 3/10 पृष्ठ 148

गीतनृत्तवाद्यादिषु विशिष्टकन्यकोचितं सर्व शिक्षयितव्या।[2] इससे स्पष्ट होता है कि हर्ष के समय में कन्याओं की शिक्षा के मुख्य विषय संगीत तथा अन्य ललित कलायें थी।

हर्ष की रचनाओं से प्रतीत होता है कि उनको संगीत से विशेष लगाव था। तभी तो उत्सवों में गीत भी गाए जाते थे। इनकी रचनाओं में उत्सवों का मनोहारी चित्रण किया गया है। मदन महोत्सव वसन्त ऋतु के आरम्भ में मनाया जाने वाला प्राचीन उत्सव है जिसे वर्तमान समय में वसन्त पंचमी तथा होलिकोत्सव के रूप में मनाते है। मदनमहोत्सव के अवसर पर सम्पूर्ण कौशाम्बी नगरी पीले रंग से रंगी हुई प्रतीत होती है। मदनमहोत्सव के अवसर पर उदयन की परिचारिकाएँ द्विपदी खण्ड (ताल पर गाया जाने वाला विशेष प्रकार का गीत) गाती है।

कुसुमायुधप्रियदूतको मुकुलायितबहुचूतकः।
शिथिलितमानग्रहणको वाति दक्षिणपवनकः।।
विकसितबकुलाशोककः काङ्क्षितप्रियजनमेलकः।
प्रतिपालनासमर्थकस्ताम्यति युवतिसार्थकः।।[3]

अर्थात् कामदेव का प्रिय दूत, बहुत से आम्र वृक्षों को मुकुलित करने वाला प्रणय स्वीकार का परित्याग करने वाला मलयानिल चल रहा है। मौलसिरी अशोक वृक्षों को विकसित करने वाला, अभीष्ट प्रियजनों से मिलने की उत्कण्ठा वाला, प्रतीक्षा करने में असमर्थ युवतियों का झुण्ड दुःखी हो रहा है।

इह प्रथमं मधुमासो जनस्य हृदयानि करोति मृदुलानि।
पश्चाद्विध्यति कामो लब्धप्रसरैः कुसुमबाणैः।।[4]

अर्थात् इस अवसर पर मधुमास प्रथम तो लोगों के हृदयों को मृदुल बना देता है तदनन्तर कामदेव प्रवेश का अवसर पाये हुए कुसुम मायकों से बींध देता है।

नागानन्द नाटक में भी संगीत को मुख्यता दी गई है। संगीत के द्वारा ही मलयवती भगवती गौरी को प्रसन्न करती है। मलयवती भगवती गौरी की आराधना में गीत गाती है।

उत्फुल्लकमलकेसरपरागगौरद्युते मम् हि गौरी।
अभिवांछितं प्रसिध्यतु भगवति युष्मत्प्रसादेन।।[5]

अर्थात् खिले हुए कमल के केसरों की धूलि की तरह गौरवर्णा, ऐश्वर्य सम्पन्न हे भगवती गौरी, आप मेरे ऊपर दया कीजिए, जिससे मेरी मनोकामना पूरी हो।

जीमूतवाहन मलयवती के गायन की प्रशंसा करता है।

व्यक्तिर्व्यञ्जनधातुना दशविधेनाप्यत्र लब्धामुना
विस्पष्टो द्रुतमध्यलम्बितपरिच्छिन्नस्त्रिधाऽयं लयः।
गोपुच्छाप्रमुखा क्रमेण यतयस्तिस्रोऽपि संपादिता–
स्तत्त्वौघानुगताश्च वाद्यविधयः सम्यक् त्रयो दर्शिताः।।[6]

इस गीत में वीणा बजाने की दसो कलाएँ स्पष्ट अभिव्यक्त हुई है। द्रुत, मध्य और विलम्बित ये तीनों लय विशेष रूप से व्यक्त हो रहा है। समा, स्रोतोवहा और गोपुच्छा ये तीनों यतियाँ क्रमशः व्यक्त हो रही है। तत्त्व, शोध एवं अनुगत बाजा बजाने की ये तीनों विधियाँ अच्छी तरह दिखलाई गई है।

मलयवती और जीमूतवाहन के विवाह अवसर पर एक पानोत्सव का आयोजन किया जाता है। इस उत्सव में समस्त सिद्ध और विद्याधर अपनी पत्नियों के साथ भाग लेते है। इस पानोत्सव में नृत्य, गीत का भी आयोजन किया जाता है।

हर्ष के नाटकों में चित्रकला का भी सुन्दर समन्वय देखने को मिलता है। रत्नावली नाटिका में सागरिका द्वारा बनाये गये चित्र को देखकर सुसंगता सागरिका की प्रशंसा करती है। **अहो ते** निपुणत्वम्। किं पुनः शून्यमिवैतच्चित्रं प्रतिभाति। तदहमप्यालिख्य रतिसनार्थं करिष्यामि।[7] अर्थात् धन्य है तुम्हारी निपुणता। फिर भी यह चित्र तो शून्य सा दिखलाई दे रहा है। अतः मैं भी चित्र बनाकर इसे रति युक्त करती हूँ। उदयन जब सागरिका द्वारा बनाये गये चित्र को देखता है तो वह आश्चर्यचकित हो जाता है।

लीलावधूतपद्मा कथयन्ती पक्षपातमधिकं नः।
मानसमुपैति केयं चित्रगता राजहंसीव।।[8]

अर्थात् खेल–खेल से कमलों को हिलाने वाली चित्रलिखित वाली हमारी अत्यधिक अनुकूल कहती हुई लक्षणों से अपने को दिखलाती हुई यह राजहंसी कौन मन में समा रही है।

विधायापूर्वपूर्णेन्दुमस्या मुखमभूद् ध्रुवम्।
धाता निजासनाम्भोजविनिमीननदुःस्थितः।।[9]

अर्थात् ब्रह्माजी विलक्षण पूर्ण चन्द्रमा के समान सुन्दर इसका मुख बनाकर अवश्यमेव अपने आसन अर्थात् कमल के संकोच से झंझट में पड़ गये होंगे।

नागानन्द नाटक में भी जब जीमूतवाहन मलयवती का चित्र बनाता है तो वह चित्र इतना सजीव प्रतीत होता है कि चतुरिका यह समझ नहीं पाती है कि यह मलयवती का चित्र है या उसका प्रतिबिम्ब। ईदृश्यं सौसादृश्यं, येन न ज्ञायते, किं तावदिहैव शिलातले भर्तृदारिकायाः प्रतिबिम्बं सङ्क्रान्तम्, उत त्वमालिखितेति।[10] अर्थात् तुममें औ इस चित्र में इतनी अधिक समानता है कि पता ही नही चलता कि पत्थर की इस पटिया पर तुम्हारा प्रतिबिम्ब पड़ रहा है या तुम्हार चित्र।

इस प्रकार संस्कृत नाट्य–परम्परा में कालिदास के पश्चात् जिस कवि का नाम लिया जाता है, वे हर्ष ही हैं, जिन्होंने शासन कार्य की अति व्यस्तता के मध्य भी अपनी साहित्यिक प्रतिभा का उद्भावन किया और उसके द्वारा सहृदयों के हृदयो को चमत्कृत किया। उनका साहित्य केवल नाटिकाओं की परम्परा के लिये ही नहीं, अपितु नाटकीय एवं काव्य गुणों के लिये भी संस्कृत साहित्य में अनुपम हैं। हर्ष ने अपने नाटकों में सगीत तथा चित्रकला का सृजन कर इन्हें और भी रसमयी बना दिया है।

सन्दर्भ सूची

1. रत्नावली नाटिका – पं. परमेश्वरदीन पाण्डेय
2. प्रियदर्शिका नाटिका –डॉ कृष्णकुमार
3. नागानन्द नाटक – डॉ. जगदीशचन्द्र मिश्र

[2] प्रियदर्शिका पृष्ठ 84
[3] रत्नावली 1/13–14 पृष्ठ 22–23
[4] रत्नावली 1/15 पृष्ठ 23
[5] नागानन्द 1/14 पृष्ठ 30
[6] नागानन्द 1/15 पृष्ठ 30–31
[7] रत्नावली पृष्ठ 51
[8] रत्नावली 2/9 पृष्ठ 73
[9] रत्नावली 2/10 पृष्ठ 73
[10] नागानन्द पृष्ठ 100